।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13

दयानन्दाब्द १८६,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं.- १९६०८५३११३

वर्ष-11 | अंक-24 | चैत्र कृ. ६ से चैत्र शु. ५ सं. २०६९ वि. | 01 से 15 अप्रैल 2013 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 08 | प्रति-5/-

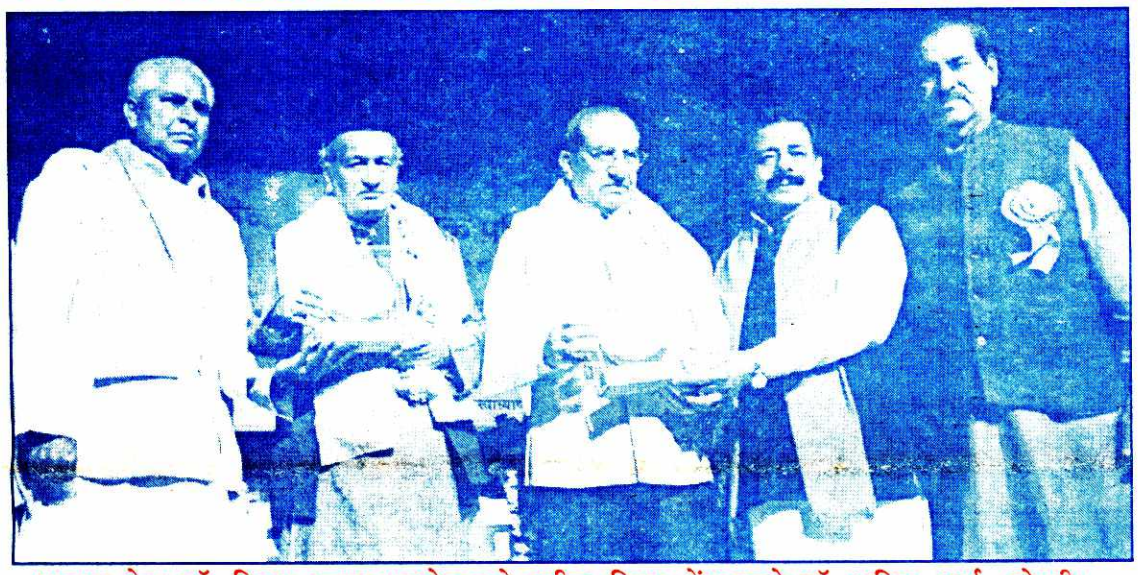

भाजपा नेता डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा को प्रतीक चिन्ह भेंट करते डॉ. अनिल आर्य- केसरी।

१८९वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर कृतज्ञ राष्ट्र ने किया नमन

स्वतंत्रता आन्दोलन के सूत्रधार थे महर्षि दयानन्द

देवेन्द्र भगत
नई दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, युग प्रवर्तक, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 189वां जन्मदिवस हिन्दी भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग में सोल्लास मनाया गया। समारोह में दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैंकड़ों आर्यजनों ने सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

मुख्यातिथि भाजपा नेता डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि दयानन्द महान क्रान्तिकारी थे। उनकी प्रेरणा से असंख्य नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।

उत्तराखण्ड के सांसद व पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द राष्ट्र नायक थे। उन्होंने जिस तेजस्वता के साथ समाज को दिशा दी, वो उल्लेखनीय है। समारोह के अध्यक्ष एमेटी विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. अशोक कुमार चौहान ने अपने उद्बोधन में कहा कि, आज के प्रदूषित वातावरण में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का महत्व बढ़ जाता है, आज भारतीय संस्कृति के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीयाध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आजादी की लड़ाई में आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही किन्तु, आज 'भगवा हिन्दू आतंकवाद का शोर मचाकर पूरे राष्ट्र को गुमराह करने का कुचक्र चलाया जा रहा है। वास्तव में भगवा तो जीवन में पूरे पक जाने के बाद त्याग और बलिदान का प्रतीक है।

वैदिक विद्वान आचार्य वागीश ने कहा कि सांस्कृतिक आक्रमण तोप व तलवार से भी अधिक घातक होता है। आज युवा पीढ़ी को अपने सही व गौरवपूर्ण इतिहास तथा महापुरुषों व शहीदों के बलिदान के बारे में बताने की आवश्यकता है ताकि युवा पीढ़ी उन पर गर्व कर सके। समारोह का उद्घाटन आर्य नेता माया प्रकाश त्यागी ने ओम् ध्वजा फहराकर किया। कार्यक्रम में आनन्द चौहान, प्रोफेसर सुन्दर लाल कथूरिया, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, दर्शन अग्निहोत्री, गोविन्द सिंह भण्डारी आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

बांग्लादेश में अत्याचारों के विरुद्ध विहिप का प्रदर्शन

बांग्ला दूतावास व मानवाधिकार आयोग को भी दिया ज्ञापन

विनोद बंसल
नई दिल्ली।

पड़ौसी देश बांग्लादेश. में हिन्दू समाज पर लगातार हो रहे प्रहारों से छुब्ध विश्व हिन्दू परिषद् ने 6 मार्च को दिल्ली के जंतर मंतर पर जमकर प्रदर्शन कर, भारत के राष्ट्रपति को ज्ञापन दिया। इस अवसर पर विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता एडवोकेट प्रकाश शर्मा ने कहा कि हिन्दूओं पर हमलों की बात आते ही आखिर हमारी सरकारें आंख व कान मूंद कर क्यों बैठ जाती हैं? बड़े पैमाने पर बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हमले हुए और हजारों हिन्दू वहां से पलायन को मजबूर हैं किन्तु, बेहद दुर्भाग्य पूर्ण है कि हमारे राष्ट्रपति अपनी हाल ही की तीन दिवसीय बांग्लादेश यात्रा में भी इस गंभीर विषय पर मौन रहे। विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख विनोद बंसल ने बताया कि, ज्ञापन की प्रति भारत में बांग्लादेशी दूतावास व अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के साथ ही विदेश मंत्रालय को भी भेजी गई है जिससे पीड़ित हिन्दुओं को अविलम्ब न्याय दिलाया जा सके और वे सुरक्षित जीवन जी सकें। हमें विश्वास है कि अब वे इस सम्बन्ध में तुरन्त कोई ठोस कदम अवश्य उठाएंगे। इस अवसर पर विहिप दिल्ली के महामंत्री सत्येन्द्र मोहन व बजरंग दल के प्रांत संयोजक शिव कुमार ने भी केन्द्र सरकार व अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग से आह्वान किया कि, वह हिन्दुओं को जिहादियों का आसान ग्रास बनने से बचाए। बंग्लादेश में हिन्दू बुरी तरह से पीड़ित हैं एवं मन्दिरों व हिन्दू घरों को तोड़ा व जलाया जा रहा है।

भारत सरकार इस बात को सुनिश्चित करे कि बंग्लादेश की धरती पर हो रहे जिहादियों के नंगे नाच को रोका जाए और जो लोग वहां से पलायन को मजबूर हैं उन्हें सीमा पर ही सीमा सुरक्षा बल के शिविरों में सुरक्षा व सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। विहिप ने मांग की, कि भारत सरकार इस सम्बन्ध में तुरंत यथोचित कार्यवाही करे तथा विश्व भर के मानवाधिकार संगठन अपना मौन तोड़कर पीड़ित हिन्दुओं की रक्षार्थ आगे आएं।

++

नवसंवत्सर, आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ पर

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

महोदय/महोदया,

आपको जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज स्थापना दिवस, नव सम्वत्सर तथा आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ के पावन उपलक्ष्य में आर्यावर्त केसरी द्वारा एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०७० विक्रमी तद्नुसार दिनांक ११ अप्रैल २०१३ को किया जायेगा जो एक ऐतिहासिक, स्मरणीय तथा संग्रहणीय अंक होगा। दो वर्ष पूर्व भी आर्यावर्त केसरी द्वारा इस उपलक्ष्य में एक भव्य विशेषांक का प्रकाशन किया गया था जिसकी सभी आर्यजनों व संस्थाओं द्वारा मुक्त कंठ से सराहना की गयी। श्रद्धेय विद्वानों, मनीषियों, लेखकों व विज्ञ पाठकों से रचनाएं आमंत्रित हैं। साथ ही विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे इस प्रकाशन यज्ञ में अपनी सहयोग रूपी आहुति प्रदान कर अनुग्रहीत करें। कृपया पाठकगण और संस्थाएं अपना आदेश भी अभी से अंकित करा दें कि उन्हें कितनी प्रतियां चाहिए। एक प्रति का मूल्य- 25/- मात्र रहेगा। धन्यवाद,

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221
उत्तर प्रदेश (मोबा. 09412139333, 08273236003)

जब जहाज लाया पहली डाक

मोहल लाल मगो

एक छोटे-से सोमर हवाई जहाज द्वारा पहली बार 18 फरवरी, 1911 को 6,500 चिट्ठियां और 40 चित्रिक पोस्टकार्ड इलाहाबाद से नैनी पहुंचाए गए थे। यह दुनिया की पहली आधिकारिक एयरमेल सेवा थी। तत्कालीन लेफ्टिनेंट गर्वनर सर जॉन हेवेट इसके गवाह थे। इस जहाज को लेकर लोगों में गजब का उत्साह था, क्योंकि इसके जरिए देश ही नहीं, दुनिया में पहली बार खत पहुंचाए जा रहे थे। खत भी विशेष लोगों ने लिखे थे। हालांकि इससे करीब चार दशक पहले 1870 में पेरिस में पहली बारएयरमेल सेवा की शुआत हुई थी,

सौ साल पहले छोटे सोमर हवाई जहाज द्वारा पहली बार आधिकारिक रूप से डाक सेवा शुरू की गई

लेकिन वह सेवा आधिकारिक नहीं थी। 50 हॉर्सपॉवर के इंजन से चलने वाले दो सीट वाले सोमर हवाई जाहज को फ्रांस के पायलट हेनरी पेक्वेट ने उड़ाया था। तब हेनरी की उम्र महज 23 साल थी। उस विमान की उड़ान क्षमता केवल 60 मील प्रति घंटा थी। हेनरी ने 130 फीट की अधिकतम ऊंचाई पर उड़ान भर इलाहाबाद से नैनी तक का सफर केवल 13 मिनट में पूरा किया था। इलाहाबाद से नैनी के बीच हवाई दूरी लगभग पांच मील थी। इस महत्वपूर्ण घटना में इस प्लेन के माध्यम से भेजी गई चिट्ठियों में पंडित जवाहरलाल नेहरू के अलावा कई गणमान्य लोगों के खत शामिल थे। उनमें से कुछ पत्र इंग्लैंड के तत्कालीन राजा जॉर्ज पंचम को संबोधित कर लिखे गए थे। डाक ले जाने वाले इस हवाई सफर को भी खासा रोमांचक बनाया गया। इस हवाई जहाज ने एक शहर से दूसरे शहर के लिए सीधी उड़ान नहीं भरी, बल्कि उसने

शेष पृष्ठ ४ पर.....

संक्षिप्त समाचार

पूर्वांचल कार्यकर्ता सम्मेलन

श्रावस्ती। आर्य उप प्रतिनिधि सभा बराइच, श्रावस्ती के तत्वाधान में १६ से १९ फरवरी तक इकौना रामलीला मैदान में पूर्वान्चल आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन किया गया।

वार्षिकोत्सव मनाया

नई दिल्ली। नागलोई आर्य समाज का वार्षिकोत्सव समारोह १७ मार्च को बलिदान दिवस के रुप में मनाया गया।

इस अवसर पर भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव सिंह के बलिदान को याद किया गया। आचार्य परमदेव एवं आर्य भजनोपदेशक नरेश दत्त ने अपने भजन प्रस्तुत किये।

उत्सव संपन्न

इलाहाबाद। तीन से छह मार्च तक इलाहाबाद में आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव हुआ· जिसमें योगेन्द्र याज्ञिक गुरुकुल होशंगाबाद एवं भजनोपदेशक सतीश सत्यम के प्रवचन हुए।

धूमधाम से मनाया उत्सव

हाथरस। १५ से १७ मार्च तक आर्यसमाज- नयागंज का वर्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें स्वामी श्रद्धानंद (पलवल) और सतीश सत्यम (दिल्ली) के प्रवचनोपदेश हुए।

संस्कृत कवि सम्मेलन

हरिद्वार (सुमन कुमार वैदिक)। संस्कृत अकादमी हरिद्वार द्वारा संस्कृत कवि सम्मेलन हुआ। इस मौके पर केन्द्रीय मन्त्री हरीश रावत एवं उत्तरांचल विश्वविद्यालय के कुलपति उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या द्रोणस्थली सहित संस्कृत कवियों ने काव्य पाठ पढ़ाया। सभी कवियों को सम्मानित किया गया।

आर्य सम्मेलन १० को

चण्डीगढ़। ऋषिवोद्ध उत्सव पर चण्डीगढ़ में १० मार्च को आर्यसम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें डॉ. अन्नपूर्णा मुख्य वक्ता रही।

सभा का निर्वाचन 14 को

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का निर्वाचन १४ अप्रैल को सभा कार्यालय -५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में प्रात: १० बजे सायं ५ बजे तक संपन्न होगा।

दीपचन्द्र धर्मार्थ न्यास द्वारा वेद प्रचार

- **एक दर्जन गांवों में बही वेद प्रचार की गंगा**

सुमन कुमार वैदिक
बिजनौर (उ.प्र.)

दीपचन्द्र धमार्थ न्यास के तत्वावधान में बिजनौर जिले में 2 से 16 फरवरी तक गांव-गांव घर-घर वेद प्रचार आपके द्वार तक, करने वाली सीता आर्य एवं आर्य भजनोपदेशक भीष्म आर्य के द्वारा वैदिक प्रचार किया। जनपद के गांव गाजीपुर, ढ़ीकरी, बढ़ापुर, कुम्हेड़ा, सिसौना, बहुपुरा, गडीवान, जोना, मकनपुर, निठारी हैबतपुर, गोविन्दपुर, मौडिया, शाहबाजपुर में प्रात: काल यज्ञ एवं सायं काल प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम एक पखबाड़ा चला। जब रोगी एक दो हो तो वह चिकित्सक के पास जाता है, किन्तु यदि महामारी फैली हो तो फिर चिकित्सक को ही रोगी के पास लाना होता है, इस भावना से यह कार्यक्रम किया गया।

वाममार्ग के इस काल में जब मानव के आहार, व्यवहार में विवेक नहीं, दूसरे का मांस खाने के गौरव का अनुभव है। ऐसे में समाज को यज्ञ की ओर ले जाने का प्रचार करने वाले साधुवाद के पात्र हैं। जो ग्राम-ग्राम में मण्डली बनाकर प्रचार कार्य कर रहे हैं। ऐसे में अपने धन को शुभ कार्य में लगाने वाले दीपचन्द ट्रस्ट के ट्रस्टी भी साधुवाद के पात्र हैं।

स्वामी प्रवासानंद की अपील

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती 84 वर्ष की अवस्था में भी सभी तरह से स्वस्थ हैं। अभी भी वैदिक धर्म का प्रचारार्थ यात्रा कर रहे हैं। समर्पित भाव से आवश्यक खर्च के लिए इन्हें सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। आप अपनी ओर से भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में खाता क्रमांक 31060169794 बचत खाते में ऑन लाइन से भेजने की कृपा करें। जिससे आवश्यक खर्च चल सके। विगत 50 वर्षों से निरंतर भारत, नेपाल(विदेश) की यात्रा वैदिक धर्म प्रचारार्थ करने वाले पं. राजपाल आर्य जिन्होंने रेल, बस, मोटर साईकिल और साईकिल से आर्यसमाज के प्रचार के रुप में प्रवास किया, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जन्मभूमि टंकारा, जिला राजकोट, गुजरात में महर्षि बोधोत्सव पर रामदेव आचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक, विद्यालय-टंकारा के पौरोहित्य में डा. स्वामी आर्येशानंद सरस्वती द्वारा सन्यास दीक्षा ग्रहण कर चतुर्थ आश्रम में प्रवेश कर शेष जीवन यथासंभव जनसेवा में समर्पित करने का निश्चय कर प्रवासीधाम 597 बोर्ड क्रमांक -5 श्रमिक कालोनी, मऊ, इंदौर (मध्यप्रदेश) में केन्द्र बनाया है। 13 वर्ष की छोटी अवस्था से ही आप आर्य समाज से जुड़े हुए हैं। हैदराबाद सत्यागृह के समय गुरुकुल में पढ़ते हुए आर्यसमाज मल्हारगंज- इन्दौर में आर्य कुमार महासभा में कार्य किया। दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा के अखिल भारतीय प्रचारक के रुप में 1964 से 1968 तक स्वतंत्रता सेनानी के सहभागी भी हुए। आप लेखक, कवि, भजन गायक, प्रवचनकर्ता यात्रा की पुस्तकों के प्रकाशक रहे हैं, मालवी बोली की भाषा के हित में मालवी के प्रथम कवि श्री पं. पन्नालाल की स्मृति में पुरुस्कार प्रदाता भी हैं।

आवश्यकता है

१. आर्ष कन्या गुरुकुल के लिए- व्याकरणाचार्य एवं अन्य विषयों हेतु अध्यापिकाओ की आवश्यकता है। ब्रह्मचारिणी अथवा वानप्रस्थी स्त्रियों को प्राथमिकता।

२. आर्ष गुरुकुल के लिए- आचार्य एवं अन्य विषयों को पढ़ाने हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। ब्रह्मचारी अथवा वानप्रस्थी पुरुषों को प्राथमिकता।

सभी प्रकार की उचित सुविधाओं का प्रबन्ध रहेगा।

दोनों गुरुकुलों में पांचवीं व छठी कक्षा में प्रवेश मई से प्रारम्भ होंगे।

सम्पर्क करें

आचार्य कृष्णप्रसाद कौटिल्य, आर्यसमाज मन्दिर, नवाबगंज, हजारी बाग (झारखण्ड)-८२५३०१

चल०- ०६५६२६३७०६/०९४३०३०९५२५

महर्षि दयानन्द वेदवेदांग विद्यापीठ

(आर्ष कन्या गुरुकुल/ आर्ष गुरुकुल)

पाकिस्तान दिवस : २३ मार्च

- मुस्लिम लीग ने लाहौर अधिवेशन में देश को विभाजित करने की मांग 23 मार्च 1940 में की थी और 14 अगस्त 1947 को उनकी मांग पूरी हो गई। पश्चिम तथा पूर्व में दो पाकिस्तान बने।
- पाकिस्तान के संस्थापक मिस्टर जिन्ना ने कहा कि देश में हिन्दू व मुस्लिम कौमे हैं, जिनका आपस में कुछ भी मेल नहीं खाता है। इसलिए मुस्लिम अलग देश में रहेंगे।
- दोनों पाकिस्तान मुस्लिम देश के रूप में अस्तित्व में आए, जिनका राजकीय धर्म इस्लाम बना और अमुस्लिम द्वितीय श्रेणी के नागरिक हो गए।
- जिन्ना ने कहा था कि पाकिस्तान में हिन्दू क्यों रहें? वे आबादी की अदला-बदली के पक्ष में थे।
- भारत के कांग्रेसी नेता आबादी की अदला-बदली के पक्ष में नहीं थे, इसलिए पाकिस्तान में कई लाख हिन्दू अभी भी हैं।
- बलूचिस्तान प्रान्त की असेम्बली में एक हिन्दू विधायक है, जिसे अल्पसंख्यक मामलों का मंत्री बनाया गया है।
- सिंध असेम्बली में लगभग 10 विधायक हैं। इनमें से एक को मंत्री बनाया गया है।
- नेशनल असेम्बली में हिन्दू- ईसाईयों के 6 सांसद हैं।
- अपरहण, जबरन वसूली, फिरौती के लिए उठा लेना, दबाव से धर्म परिवर्तन, डकैती, लूटमार, हत्याएं जैसी घटनाएं समय-समय पर होती हैं, किन्तु पुलिस मुस्लिमों का ही पक्ष लेती है।
- पाकिस्तान में आतंकवादी संगठन कई हैं, जो अपनी हरकतें करते रहते हैं। पाकिस्तान का क्षेत्रफल लगभग 2.75 लाख वर्गमील है।
- चूंकि भारत से सारे मुस्लिम पाकिस्तान नहीं गए, अत: उनके हिस्से की 88000 वर्गमील भूमि पाकिस्तान को ज्यादा मिल गई।
- वास्तव में अनौपचारिक रूप से पाकिस्तान तो 712 ई. से ही बनना शुरु हो गया था, जब मौ. बिन कासिम ने एक हिन्दू को मुस्लिम बनाया था। धर्मान्तरण चलता रहा। अत: 1947 में मुस्लिम 24% हो गए थे।
- 4 जून 2005 को पाकिस्तान यात्रा के दौरान मि. जिन्ना के मकबरे पर रखी विजिटर्स बुक में भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने लिखा "ऐसे कम ही होते हैं, जो इतिहास बनाते हैं, जिन्ना भी ऐसे ही थे। पाकिस्तान की संविधान सभा में 11 अगस्त 1947 को मि. जिन्ना ने कहा था कि अब पाकिस्तान में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई व सिख अपने-अपने पूजा स्थलों में जाकर पूजा कर सकेंगे। राज्य किसी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा।" मैं ऐसे महान व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।
- आडवाणी द्वारा ऐसा लिखना भारतीयों को कतई पसन्द नहीं आया था। उनकी खूब आलोचना हुई। बाद में उन्हें भाजपा का अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा। वास्तव में जिन्ना की कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अन्तर था। यदि वे पाकिस्तान को धर्मनिरपेक्ष कह रहे थे, तो इस्लाम राजकीय धर्म कैसे हो गया?
- जिन्ना ने मौखिक आदेश में कहा था कि देश में एक भी केशधारी हिन्दू (सिख) नहीं होना चाहिए।
- जब लाशों से भरी हुई प्रथम रेलगाड़ी दिल्ली पहुंची, जिन्ना ने कहा था कि यह पाकिस्तान की भारत को सौगात है।
- 1947 में अनुमानत: 15 लाख लोग मारे गए। यह विश्व का सबसे बड़ा भयंकर रक्तपात था, फिर भी जिन्ना को महान कैसे और क्यों कहा जाए?
- सरकारी आंकड़ों के अनुसार पाकिस्तान में हिन्दू अब 1.6% हैं जबकि 1947 में 15 से 25% तक थे।
- संयुक्त पाकिस्तान का पूर्वी भाग 1971 में अलग हो गया, जिसका नाम बांग्लादेश रखा गया है।
- बांग्लादेश का क्षेत्रफल लगभग 50000 वर्ग मील है। चूकि पूर्वोत्तर भारत के मुस्लिम वहां कम गए। इस प्रकार बंगला देश को 20000 वर्गमील भूमि अधिक मिल गई।
- पाकिस्तान और बंगला देश में 1947 में नहीं जाने वालों की संख्या 3 करोड़ थी।
- हमारी इनसे मांग है कि वे पाकिस्तान और बंगला देश से अपने हिस्से की जमीन मांगें, जो 88000+20000= 108000 वर्गमील बैठती है।

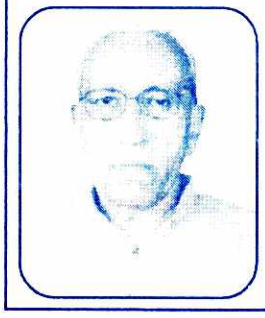

जब तक पाकिस्तान बना रहेगा, भारत में अशांति के बादल मंडराते रहेंगे।।

इन्द्रदेव गुलाटी

सावरकरवाद प्रचार सभा, २६-के.पी. रोड, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

मोबा. : 08958778443

हम स्वामी जी का सदा नाम लिए जाते हैं जहाँ को वेदों का पैगाम दिए जाते हैं

डॉ. अशोक आर्य
मण्डी डबवाली (हरियाणा)

मंडी डबवाली स्थानीय आर्य समाज द्वारा आयोजित पांच दिवसीय वेद प्रचार उत्सव के दूसरे दिन प्रात: कालीन यज्ञ का आयोजन रमेश तर्गोत्रा के निवास पर किया गया। यज्ञोपरांत वयोवद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. ओमपकाश वर्मा ने अपने भजन- ''काशी जा कर देख लिया मथुरा जाकर देख लिया, कहीं भी मन का मैल न उतरा खूब नहाकर देख लिया।'' के माध्यम से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। श्री वर्मा ने बताया कि कसी भी तीर्थ स्थान पर, किसी भी नदी में स्नान करने से पाप नहीं धुलते, प्रभु का सच्चे मन से मनन व चिंतन करने से तथा उसका आशीर्वाद प्राप्त करने से ही सफल मिलता है। प्रभु से जब जीव की नजरें मिल जाती हैं तो सब मैल स्वत: ही धुल जाता है, मानव मैल रहित हो जाता है। महापुरुषों का कथन है कि गंगा में डुबकी लगाने से पाप नहीं धुलते, अपितु सच्चे मन मे ईश्वर की सेवा करने से तथा गरीबों की सहायता करने से ही पुण्य मिलता है। उन्होंने आगे बताया कि-: ''हम तो स्वामी का सदा नाम लिये जाते हैं, जहाँ को वेदों का पैगाम दिए जाते हैं।।''

श्री वर्मा के अनुसार महर्षि दयानंद के बताये मार्ग पर चलने से ही कल्याण संभव है। वेदों का प्रचार-प्रसार ही कल्याण का साधन है। इसलिए अपने जीवन को वेद पर आधारित करना चाहिए। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रकाण्ड पण्डित इन्द्रजीत देव ने धर्म के दस लक्षणों में से प्रथम लक्षण धृति अर्थात् क्षमा पर विषद् विवेचना प्रस्तुत करते हुए बताया कि, दाता के दरबार में प्रत्येक जीव का खाता रहता है। जो जीव जैसा कर्म करता है तद्नुरुप ही उसे फल प्राप्त होता है। जब हम कर्म बुरे करते हुए दूसरों को दुख पहुंचाते हैं, तो हम सुखी होने की आशा कैसे कर सकते हैं? साधारण व्यक्ति पर दया करते हुए उसे क्षमा करें। प्रथम दिवस के रात्री कालीन सत्र में विवाह प्रकरण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि, विवाह दो परिवारों को जोड़ने वाला एक संस्कार है। जिसमें वर और वधु, पति-पत्नी इस तरह बंध जाते हैं, जिस प्रकार दो नदियों का जल एक गिलास में डालने से मिल जाता है। एक बार मिले दो नदियों के जल को संसार की कोई शक्ति अलग नहीं कर सकती, इसी प्रकार पति-पत्नी को कभी अलग नहीं होना चाहिए।

तेरी हस्ती में मुझको यकीं भी नहीं : डॉ. अशोक आर्य

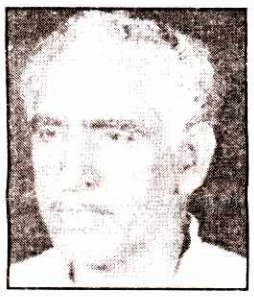

मण्डी डबवाली। आर्य समाज मंडी डबवाली द्वारा आयोजित पांच दिवसीय वेद प्रचार उत्सव का श्री गणेश विजय कुमार शास्त्री के निवास से हुआ। प्रात: कालीन सभा पर यज्ञोपरांत वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. ओमप्रकाश वर्मा ने भजनों के साथ ही भजनों की व्याख्या करते हुए ईश्वर के स्वरुप व कार्यों का वर्णन करते हुए कहा कि, ईश्वर चार कार्य करता है।

''सृष्टि में व्यापक प्रभु हैं: दृष्टि से दिखाई नहीं देता/ तेरी हस्ती में मुझको यकीं भी नहीं/ पर मेरे होठो पर नहीं भी नहीं//'' उक्त भजन की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि ईश्वर सृष्टि की रचना करता है, ईश्वर सृष्टि को चलाता है, ईश्वर सृष्टि का संहार करता है, ईश्वर जीव को उसके द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार उसे अच्छा या बुरा फल देता है। यह चार ही कार्य ईश्वर करता है, जबकि जीव अनेक कार्य करता है, जो कार्य वह करता है वही उसके कर्म होते हैं, जिन का फल ईश्वर जीव को देता है। उन्होंने आगे बताया कि ईश्वर सर्वव्यापक है क्योंकि वह प्रत्येक जीव को कर्मों की देखरेख करता है। देखरेख का यह कार्य सर्वव्यापक बना हुए बिना कर पाना संभव ही नहीं हो सकता। परमपिता परमात्मा के इस कार्य के भय से भयभीत प्राणी बुरे कर्मों से अपने आप को बचाने का यत्न करता है।

तत्पश्चात् पं इन्द्रजीत देव ने त्रैतवाद पर बड़ी सुन्दर विवेचना प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि संसार में जितने भी कार्य होते हैं। इन तीन सिद्धान्तों में-उपादान, निर्मित कारण, साधारण कारण प्रमुख है। अर्थात किसी कार्य को करने के निर्णय उस कार्य को करने का प्रयोजन तथा उस कार्य को संपन्न करने के लिए साधन या सामग्री का होना आवश्यक है।

॥ 'ओ३म्' कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्यरत्न डॉ० ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

♦ न्यास द्वारा ONLINE TEST प्रारम्भ। ♦वर्ष में तीन बार दिया जावेगा 5100/- रु0 का उपरोक्त पुरस्कार। ♦ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं। ♦विश्व भर के लोगों से इस ONLINE TEST में भाग लेने का अनुरोध। **आप जीत सकते हैं 5100/-**

आपको क्या करना होगा- • न्यास की **Websit-www.satyarthprakashnyas.org** पर **Log on** करें। • **ONLINE TEST** को **click** करें • साधारण-सा जानकारी पत्र On line भरें। • 50 प्रश्नों का सैट हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध है। • भाषा-विकल्प चुनें। • बहु विकल्पीय प्रश्न-पत्र को हल करें। • आप अपने प्राप्तांक तत्समय ही जान सकेंगे। •पुरस्कार चार माह में एक बार दिया जावेगा। अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले एक से अधिक प्रतिभागी होने की दशा में निर्णय लॉटरी द्वारा होगा। प्रतिभागी के लिए आयु सीमा व अन्य कोई बन्धन नहीं है। • अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश एवं न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ पढ़ें, जो कि हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

-डॉ० अमृतलाल तापड़िया, परीक्षा समन्वयक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

कार्यालय : नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज०)- ३१३००१
टेली फैक्स : २४१७६९४, मोबा० : ९३१४२३५१०१ (कार्य. अध्यक्ष), ९८२९०६३११० (व्यवस्थापक)
ई मेल : satyarthnyas 1@gmail.com, वेबसाइट : www.satyarthprakash.org

॥ओ३म् प्रतिष्ठ- 'ईश्वर' एक निराकर, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता आनंदमयी शक्ति है।

आर्य की पहचान :- ओम् का ध्यान, वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, गोमक्त संस्कारी सन्तान व राष्ट्रहित बलिदान

मात्र 100/- में 6 वीडियो सी.डी. से क्रान्तिकारी वैदिक प्रवचन

सम्पादक :- आचार्य आर्यनरेश वैदिकगवेषक, पीएच.डी. गाईड

संस्थापक :- उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल-173101, मो- 08010063725, 09418021091, 09871264213

फेसबुक सम्पर्क हेतु टाईप- "आचार्य आर्यनरेश"

डी.वी.डी.- ईश सत्ता विज्ञान, यज्ञ विज्ञान, वेद विज्ञान, मनो विज्ञान, नारी शक्ति, शरीर स्वस्थता विज्ञान, भाग्यवाद, राष्ट्र रक्षा हेतु आतंकवाद निवारण विज्ञान आदि।

सम्मेलनों की सफलता आन्दोलनों से

ऋषि ऋण ऐसे चुकाएं- गो रक्षा, समान कानून संहिता, नग्नता निवारक, विवाह आयु 16-25, कालाधन वापिस लाने का विधेयक पारित करवाएं व डी.डी. वेद चैनल चलवाएं अन्यथा सरकार से पृथक हो जाएं।

आचार्य आर्यनरेश

विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत पाठ व बिना अंग्रेजी उच्च शिक्षा-

आर्य बाहर से आए, वेदों का गलत भाष्य, जाति तथा मजहब के नाम पर आरक्षण, अण्डा मास मछली व झूठा इतिहास हटवाएं। विश्व मानव धर्म वेद को (सैकुलर) भारत धर्म बनवाएं, गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करवायें व युवाओं का चरित्र हरण करने वाले- समलैंगिकता, लिविंग रिलेशनशिप, गृहस्थ में रखैल का अधिकार बूचड़खाने, जिहादी आतंकवाद, छुआ-छूत, भाग्यवाद, पशुबलि प्रेरणा को पुस्तकों व चैनलों से समाप्त करवायें एवं महर्षि दयानंद को सच्ची श्रद्धांजलि हेतु रुपया डॉलर के बराबर व वैदिक राष्ट्रगान चलवाएं

विशेष :- 60 वर्ष से ऊपर वाले आर्यजन वानप्रस्थ लेकर 'दयानन्द सेना' बनायें, इण्डिया विदेशियत को हटाएं एवं देश को स्वदेशी भारत आर्यावर्त बनाएं।

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

रजिस्ट्रेशन 1 मार्च से

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक ने अत्यल्प काल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन यथाक्रम सुशोभित हैं। गुरुकुल के हरे पार्क, पार्कों की प्रवेशवीथिकाएं, तथा उनके उपद्वारों पर छायी लताओं के पुष्पगुच्छ पथिकों के मस्तक को चूमते-से प्रतीत होते हैं।

गुरुकुल में आपको प्रचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा। संस्था ने शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण में विशेष ख्याति अर्जित की है। अतएव प्रतिवर्ष प्रवेशार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष आपकी संस्था को स्थानाभाव के कारण ५६८ प्रवेशार्थियों को लौटाना पड़ा । प्रवेश तथा व्यवस्था संबन्धी जानकारी निम्न है-

विशेषताएं :-

1. प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।
2. 10+2 तक C.B.S.E. दिल्ली से मान्यता।
3. प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।
4. संध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, और नियमित दिनचर्या
5. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
6. आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
7. कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएं।
8. 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साइंस साइड।
9. हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र : 08607776897, 01262-217550

संक्षिप्त समाचार

विश्व संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न

कांठमांडू (नेपाल)। बारह मार्च को कांठमाण्डू में विश्व संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या द्रोण स्थली देहरादून ने सहभागिता की।

वरिष्ठ पत्रकार लखन लाल का निधन

नई दिल्ली। वरिष्ठ पत्रकार लखन लाल का अचानक २८ जनवरी को ९० वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। श्री लाल दैनिक हिन्दुस्तान एवं आर्यावर्त केसरी से काफी लम्बे समय से जुड़े रहे हैं।

ऋग्वेद परायण यज्ञ

चोरीचोरा। चौबीस फरवरी से चार मार्च तक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल चोरी चोरा आर्यसमाज में ऋग्वेद परायण यज्ञ का आयोजन किय। गया।

ऋग्वेद के सूक्तों पर होंगे शोध-पत्र वाचन

नई दिल्ली। संस्कृत अकादमी दिल्ली के तत्वावधान में आर्य विदुषियां ऋग्वेद क सूक्तों पर अपने शोध रखेंगी। इस अवसर पर डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. प्रियंवदा वेद भारती, कल्पना शास्त्री एवं सुशील लाल शास्त्री गुरुकुल नजीबाबाद की सहभागिता होगी।

माघ पूर्णिमा पर यज्ञ

अफजलगढ़ (सतीश आर्य)। प्रातः कालीन निर्मल स्वच्छ वातावरण में ब्रह्मपाल सिंह वैद्य के निवास पर ब्रह्मा डॉ. अशोक कुमार आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न हुआ। यज्ञ की विवेचना करते हुए श्री आर्य ने अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि वेदों में कहा गया है कि मन से भगवान को ढूंढो। यतीश जी द्वारा अष्ठांग योग पर विशेष बल दिया गया। आयोजन परमपिता की कृपा है। दूरदराज से आये गणमान्य भद्रपुरुष शामिल हुए।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

- आर्यसमाज, गोविन्दगढ़ जालंधर का ७१वां उत्सव १८ से २४ फरवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।
- आर्यसमाज, आदर्शनगर, लखनऊ का ५१वां उत्सव २४ से २७ जनवरी तक मनाया गया।

यज्ञ में विचार व्यक्त करतीं बहिन इन्दू आर्या- केसरी।

माघ मास का मासिक यज्ञ संपन्न

सतीश कुमार आर्य
धामपुर (बिजनौर)।

इस वर्ष की माघ मास का मासिक यज्ञ, माघ पूर्णिमा 25 फरवरी को पूर्ण हुआ। यज्ञ में वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार से बहिन इंदू मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित हुईं। यज्ञ की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि परोपकार का प्रत्येक कार्य राष्ट्र की रक्षा हो। अपने परिवार का पालन करना, समाज में अच्छी भावना से किया गया कार्य यज्ञ है। यज्ञ को याज्ञिक होकर करना चाहिए। राष्ट्रहित में धर्मपालन करें। राष्ट्र कल्याण हेतु यज्ञ अवश्य करें। बहिन इन्दू ने पूणाहुति के समय सब उपस्थित महिलाओं व आर्यो से मानसिक आहूति डलवायी।

डीएवी के वार्षिकोत्सव पर उपस्थित आर्यगणों का सुन्दर दृश्य-केसरी

नर सेवा ही नारायण सेवा : पूनम सूरी

अर्जुनदेव चड्ढा
कोटा।

डीएवी स्थापना के 127 वें वर्ष के उपलक्ष्य में संस्था की ओर से 'निर्बलों को सम्बल' देने का उपक्रम किया गया। इस अवसर पर डीएवी प्रबंधकृत समिति नई दिल्ली, के प्रधान पूनम सूरी के द्वारा गरीबों और जरूरतमंदों को कम्बल और सिलाई मशीनों का वितरण किया गया। सूरी ने सौ निर्धन परिवारों व विकलांगों को कम्बल, शॉल बांटे तथा जरूरतमंद महिलाओं को स्वरोजगार हेतु सिलाई मशीनों का वितरण किया गया। ताकि वे सिलाई–कढाई करके परिवार का भरण–पोषण व अपने बच्चों को शिक्षित कर सकें। वहीं एक विकलांग को ट्राई साईकिल भी भेंट की गई। इस दौरान सूरी ने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का छठा नियम 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' के सन्दर्भ में हमें सदैव लोगों की सेवा के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेवा करने के लिए सदैव धन की आवश्यकता नहीं होती है। सेवा का कार्य कहीं पर भी किया जा सकता है। सूरी ने निर्धनों और गरीबों की सेवा को सबसे बड़ा उपकार बताया और कहा कि पीडित, शोषित लोगों की अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता व सहयोग करना चाहिए। उन्होनें कहा कि वे भी भगवान की बनाई हुई साकार मूर्तियां हैं। मणि सूरी, डीएवी निदेशक, जुनेश काकडिया, डीएवी पब्लिक स्कूल की कार्यकारी प्राचार्या अंजू उतरेजा ने भी महिलाओं को सिलाई मशीनें, शॉलें और पुरूषों को कम्बल वितरित किए।

इस अवसर पर सतपाल आर्य, अशोक शर्मा, अर्जुनदेव चड्ढा सहित भारी संख्या में आर्यगण उपस्थित रहे।

आर्यावर्त केसरी के मान्य सदस्यों की सेवा में सदस्यता- सहयोग हेतु विनम्र निवेदन

(सम्मानित सदस्य संख्या.....)

मान्यवर महोदय, सादर-सप्रेम नमस्ते!

आशा है, सपरिवार स्वस्थ व सानन्द होंगे। आपकी सेवा में **आर्यावर्त केसरी** निरंतर भेजा जा रहा है-- मिल रहा होगा।

हमें विनम्रतापूर्वक यह अनुरोध करना है कि आपकी **सदस्यता सहयोग राशि** माह..... में समाप्त हो रही है। कृपया अपना **वार्षिक/द्विवार्षिक/आजीवन** अथवा **संरक्षक सदस्यता सहयोग** क्रमशः **रु० 100/-, 200/-, 1100/-** अथवा **3100/-** स्व सुविधानुसार भेजने का कष्ट करें। सहयोग राशि **धनादेश** के द्वारा अथवा आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा के खाता सं0 **30404724002** अथवा सिंडिकेट बैंक के खाता सं0 **88222200014649** में जमा करा सकते हैं। **कृपया सहयोग राशि जमा करने पर हमारे दूरभाष संख्या-05922-262033 अथवा चलभाष संख्या-08273236003 पर अवश्य सूचना देने का कष्ट करें।** आशा है पूर्व की भांति सदैव सहयोग व सद्भाव बनाए रखेंगे। हार्दिक धन्यवाद के साथ-

डॉ० अशोक कुमार आर्य- सम्पादक, आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)चल. : 09412139333

व्याधि निवारण परामर्श-पत्रक

नाम.....पता.....
.....लिंग.....वजन.....आयु.....
रोग समस्या का विस्तृत विवरण.....
यदि कोई बीमारी पहले थी, उसका विवरण.....
भोजन ठीक समय से लेते हैं या नहीं.....
नींद की स्थिति.....
कौन सी वस्तु ज्यादा खाते हैं.....मीठा/नमकीन/खट्टा/कड़वा
शाकाहारी या मांसाहारी.....
शौच की स्थिति.....
मानसिक स्थिति.....
वर्तमान में रोग.....
अन्य कोई विवरण.....
दिनांक.....

आपको निरोगी होना चाहिए यह हमारा उद्देश्य है। अतः आप इस नयी योजना का लाभ उठायें, आपको शीघ्र उत्तर दिया जायेगा। यदि पूरी बात प्रोफार्मा में न आये तो अलग से पत्र लिख सकते हैं। प्रोफार्मा को भेजते समय अपने अभी तक के इलाज के पर्चे व जांच रिपोर्ट की फोटो कॉपी अवश्य भेजें। यदि आप इस प्रोफार्मा को भरकर एवं साथ में 5/- का डाक टिकट नहीं भेजते हैं, तो उत्तर देना संभव नहीं है।

प्रोफार्मा भेजने का पता-
डॉ. सत्य प्रकाश गुप्ता
गली नं. - A/1 आदर्श नगर, नजीबाबाद
जिला- बिजनौर, उत्तर प्रदेश-२४६७६३
दूरभाष- 09759981474
पर सम्पर्क का समय केवल
शाम ७ से ८ बजे तक

प्रथम पृष्ठ का शेष : जब हवाई जहाज लाया....

नैनी के लिए रवाना होने से पहले इलाहाबाद स्थित संगम के ऊपर कई चक्कर लगाए। जहाज को बहुत खूबसूरती से सजाया गया था। इस यात्रा का उद्देश्य यह भी था कि इसे विज्ञापन के लिए प्रायोजित किया जाए। जहाजों द्वारा आज भी गुब्बारे से बैनर गिराकर प्रचार किया जाता है, लेकिन उस समय यह सब देखना खासा रोमांचक अनुभव था। दरअसल तत्कालीन ब्रिटिश कमांडर वाल्टर जी. विंडहम के मन में चिट्ठियों की सुरक्षित और तेज आवाजाही के लिए इस तरह की मेल सेवा का विचार आया था, जिसे हेनरी पेक्वेट से साकार किया था। विंडहम के आग्रह पर भारतीय पोस्ट ऑफिस के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल सर ज्योफ्री चार्ल्स ने इस सेवा को मंजूरी दी। तब एक औंस वजन तक की चिट्ठी या कार्ड ले जाने की इजाजत थी। नैनी स्टेशन के पास पोस्ट ऑफिस सेवा केंद्र इसलिए चुना गया, क्योंकि वह केंद्र कोलकाता -मुम्बई रेल लाइन के करीब था।

समाधान के लिए चाहिए दृढ़ इच्छाशक्ति

देश में चारों ओर समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, या तो समाधान की कोशिशें नहीं की जाती, या फिर इच्छाशक्ति का अभाव सा दिखता है। अन्यथा क्या मजाल है कि समस्याएं दिन ब दिन बढ़ती जाएं और देश की पीढ़ी में गहरा असंतोष पैठ बनाता रहे। वास्वत में, केवल लुभावने आश्वासनों अथवा प्रलोभनों से समाधान नहीं हो सकता, समाधान तो समस्या की जड़ में पहुंचने से होगा। कहीं लेपटॉप, कहीं कन्या विद्याधन तो कहीं बेरोजगारी भत्ते के नाम पर युवा पीढ़ी को प्रलोभित करने से वोट बैंक तो बढ़ सकता है, तो कहीं आरक्षण में नित नये जाति, समुदाय अथवा वर्ग को सम्मिलित कर वोट बैंक के नये-नये समीकरण बनाये जा सकते हैं। किन्तु इससे न तो समाधान बेरोजगारी की दिशा में होगा और न ही कोई हल आतंकवाद का निकलेगा। एक ओर गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने वाले लोग बहुतायत में हैं, तो दूसरी ओर कालेधन के मायाजाल में अर्थात् भ्रष्टाचार के गहरे गर्त में धंसे हुए लोग हैं, जिस कारण गरीबी और अमीरी के बीच बढ़ती और गहरी होती खाई एक और नये वर्ग संघर्ष को जन्म दे रही है। न नियंत्रण महंगाई पर है और न ही बढ़ती कीमतों पर। लोक कल्याणकारी राज्य के नाम पर मनमाने कदम उठाने का नित् नया तमाशा शासन स्तर पर देखा जा सकता है। लगातार विभिन्न योजनाओं की आड़ में धन का दुरुपयोग और फिर उसकी भरपाई के लिए आम जनता पर नये-नये टैक्सों का बोझ; जैसे आज के समाज की एक क्रूर नियति बन चुकी है। पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य के होते हुए भी निरन्तर एकता और अखण्डता को मिलने वाली चुनौतियां नये खतरों को जन्म दे रही हैं। नारी अस्मिता की रक्षा करने में भी नाकामी लगातार देखी जा सकती है। प्रश्न ज्यों के त्यों हैं, लेकिन उत्तर की तलाश के प्रति कोई भी दिलचस्पी दिखाई नहीं देती। केवल भौतिक प्रगति कर लेने से ही उपलब्धियों का रिकार्ड नहीं बनता, जिस समाज और राष्ट्र में नैतिकता, मानवता, संवेदनाएं और मूल्य नहीं होते, उसका ग्राफ अधोगामी ही होता है। निसंदेह आज आवश्यकता निराशा और धुधंलकों के मध्य आशा और प्रकाश का सृजन करने की है। याद रहे कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सम्यक् पहल से कोई भी समाधान असंभव नहीं।

जनवाणी

महंगाई पर नियंत्रण करे सरकार

महोदय,

हाल में पाकिस्तान में रोजमर्रा की चीजों के दामों में भारी इजाफा हुआ है क्योंकि, केन्द्र और राज्यों की सरकारें महंगाई को रोकने में नाकाम रही हैं। यह स्पष्ट है कि कारोबारियों पर कोई जोर नहीं चल रहा है, वे मनमाने तरीके से कीमतें बढ़ा रहे हैं। बे लगाम महंगाई से आम भारतीय को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वास्तविकता यह भी है कि घरेलू चीजों की महंगाई रोकने के लिए सरकारों द्वारा कोई विशेष प्रयास नहीं किये जा रहे हैं। सरकारी महकमें कम खर्ची की दलीलें बार-बार पेश करते हैं। लेकिन उनपर खुद अमल करने में चूक जाते हैं। बेतहाशा बढ़ती महंगाई से अवाम में नाउम्मीदी का माहौल बन गया है। लोग हुकूमत के वादों-दावों पर यकीन करनें से कतरानें लगे हैं। खाने-पीने के समान के दाम आसमान पर होने के कारण गरीबी बढ़ती जा रही है। यह सच है कि पेट्रोलियम पदार्थों की महंगाई बढ़ने के कारण और चीजों पर भी महंगाई बढ़ी है। कुल मिलाकर महंगाई पर रोक लगनी अति आवश्यक है अन्यथा गरीबी बढ़ती जायेगी।

अतुल कुमार शुक्ला
लाईन पार, मुरादाबाद

प्रेरक प्रसंग

1960 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ जब प्रथम बार भारत आई तो राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की वह मेहमान थीं। जब भारत भ्रमण के उपरान्त महारानी एलिजाबेथ वापस ब्रिटैन जाने लगीं तो राजेन्द्र प्रसाद को उन्होंने अत्यन्त कीमती पेन उपहार स्वरूप दिया। जिसको देखकर राजेन्द्र प्रसाद अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहा कि मैं अब अपनी आत्मकथा लिखूंगा। महारानी ने पूछा कि आत्म कथा में क्या-क्या लिखोगे? डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने तुरन्त जवाब दिया कि आपके पूर्वजों द्वारा भारत के गरीबों पर जो जुल्म किये गये उन सबको मैं इस पेन से भारती पर उतारूंगा। महारानी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के इन वचनों को सुनकर सतब्ध रह गई।

-कृष्ण मोहन गोयल, ११३-बाजार कोट, अमरोहा

प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

प्रथम संस्कृति ही विश्व के लिए वरणीय

आचार्य वैद्य विक्रम देव शास्त्री

सृष्टि के प्रारम्भ से ही यज्ञवेदी पुकारती चली आ रही है कि हे मानव! तू वास्तविक मनुष्य बन, जैसे यह मेरा वेद कहता है, इस वेद वाणी के अनुकूल अपना जीवन बना, मानव को यज्ञवेदी पर आना चाहिए। जिससे वह अपने को उँचा बनाकर संसार पर शासन कर सकता है। इसकी अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए चरित्रवान, ओजस्वी और तेजस्वी बनकर आना पड़ेगा। यज्ञवेदी मानव को मानव, पापी को भी मानव, दुराचारी को भी सदाचारी बना देती है। यज्ञ वेदी मानव के हृदय में राष्ट्र कल्याण सात्विकता सहित संसार का कल्याण करने के लिए प्रेरित कर देती है। यज्ञवेदी हमारी परम्परा, हमारी संस्कृति, हमारा धर्म तथा विज्ञान है, इनकी रक्षा प्रत्येक मानव तथा ऋषि को करनी चाहिए। किसी भी यज्ञवेदी में ब्रह्मा के लिए यह आवश्यक है कि वह सदाचारी हो तथा इस विज्ञान को भली भांति जानता हो कि यज्ञशाला में बैठे हुए व्यक्तियों में यह पहचान कर सकें कि वह यज्ञवेदी में बैठने का अधिकारी है या नहीं। यज्ञवेदी का संकल्प करके आना चाहिए कि मै प्रतिज्ञा करने जा रहा हूं कि मै दूसरे जीवों का भक्षण नहीं करुंगा। सदाचारी बनकर ब्रह्मा के समीप जाना चाहिए। ब्रह्मा उंचा आदेश देकर नियमों के अनुकूल कार्य में प्रेरित करता है। ब्रह्मा को मनोविज्ञान और मस्तिष्क विज्ञान का जानकार होना चाहिए। उसे प्रत्येक वेद मन्त्र पर विचार करना चाहिए। आदि गुरु ब्रह्मा के समान हमें चरित्रवान बनना होगा। मानव भौतिकवाद में फंसकर धन ऐश्वर्य की कल्पना करता है। अनेक प्रकार के पदों और सम्मान को चाहता है। किन्तु ये सब नश्वर हैं। वास्तविक पद और आसन वह संकल्प है, जो मानव के आदि और अन्त दोनों में हो, वह यज्ञवेदी है। यज्ञ कर्मकांड का जो रहस्य है वह बहुत ही सूक्ष्म है, क्योंकि मानव को कर्मकाण्ड हाथों से ही नही करना है। कर्मकाण्ड का अभिप्राय यह है कि जो आत्मा का प्रकाश है, आत्मा की ज्योति है, उस ज्योति का हमें इस ज्योति से समन्वय करना है, जो अग्नि देवताओं का दूत बना है। संसार में वही मानव सुख पाता है, जो किसी का बन जाता है। जैसे यज्ञ में समिधा अग्निरुपी गुरु के पास जाकर पार्थिव परमाणुओं को समाप्त करके सूक्ष्मरुप धारण करके सूर्यमंडल तक पहुंचकर देवताओं की शरण में चली जाती है। आदित्य उन्हें ग्रहण करके धीमी -धीमी किरणों के द्वारा समुद्र में पहुंचा देते हैं। समुद्र में मेघ के रुप में धारण करके सृष्टि द्वारा पृथ्वी पर आ जाती है। पृथ्वी पर स्थावर सृष्टि के रुप में धारण करके संसार का कल्याण करती है। इससे नाना प्रकार की समिधा तथा सामग्रियां उत्पन्न होती हैं।

यज्ञवेदी अनेक प्रकार के ऋषियों ने वर्णित की हैं। लगभग चौरासी प्रकार की यज्ञशालाएं होती हैं। इनमें पंद्रह प्रकार की यज्ञशालाएं मुख्य होती हैं। एक त्रिकोण यज्ञवेदी, एक चतुष्कोण एक पचकोण, एक सप्तकोण यज्ञवेदी होती हैं। चतुष्कोण यज्ञवेदी की सुगन्धि पार्थिव सूर्य की किरणों को प्राप्त होती है। पंद्रह कोण की यज्ञशाला गौमेघ यज्ञ में बनायी जाती है। उसकी सुगंधित तरंगों की धाराओं का संबंध ध्रुवमंडल तक रहता है। सप्तकोण की यज्ञशाला से जो सुगन्धि उत्पन्न होती है, वह इस पृथ्वी की हो जाती है, अर्थात् पार्थिव तत्व को प्राप्त हो जाती है।

दैवीयज्ञ:- दैवीयज्ञ दो प्रकार का होता है एक भौतिक तथा दूसरा आध्यात्मिक।

भौतिक दैवी यज्ञ:- चैत्रमास में दैवी यज्ञ किये जाते हैं, देवीयज्ञ करने के लिए सप्तकोण की यज्ञशाला का निर्माण किया जाता है। यजमान पत्नी सहित बैठकर सर्वप्रथम ज्योति को जागरुक करता है। फिर प्रभु की याचना करते हुए उसकी गोद में जाने का प्रयास करता है। यज्ञशाला में अखंडज्योति शांत नहीं होनी चाहिए। जब तक अनुष्ठान पूरा न हो जाये, यह अखंडज्योति गौघृत को लेकर जो सुगंध करती है, उससे अशुद्ध परमाणु नष्ट हो जाते हैं, वातावरण पवित्र बनता है। यजमान दैविक यज्ञ करने के लिए तत्पर होता है, वह दैविक विचारधारा को तथा मानव पर आयी दैविक आपत्ति को शांत किया जाए। प्रकृति से जितना कष्ट होता है उसे दैविक कहते हैं। यह प्रार्थना की जाती है, हे प्रभु! वह आपत्ति (भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जलपलावन (सुनामी लहरें) आदि हमें न दे, तथा प्रकृति हमारे जीवन में शान्त भाव से रमण करती रहे। वेदों में प्रकृति को देवी, धेनू, रेणुका, काली मां, दुर्गा मां, सोमधामकेतु, वैष्णवी आदि नामों से पुकारा जाता है। यह यज्ञ इस भावना से किया जाता है कि आधिभौतिक आपत्तियां इस मानव समाज पर न आयें। इस प्रकार का अनुष्ठान दैवी-यज्ञ करने वाले जो दैवी कर्मकाण्ड को जानते हैं वे सप्त जिंहावाली यज्ञशाला का निर्माण करते हैं, क्योंकि अग्नि की सप्त जिंहाएं होती हैं, अत: सदाकोणों वाली यज्ञशाला बनायी जाती है। पश्चिम भाग में तीन जिंहाएं होती हैं। जैसे एक प्रकार के परमाणु को जानने वाला वैज्ञानिक जब निर्माण करना आरम्भ करता है तो उसका यह विचार रहता है कि वायुमंडल में विषैली वायु का संचार हो जाए प्रसारित हो जाए। इसी प्रकार यज्ञशाला का निर्माण किया जाता है। चैत्रमास में ऋषि मुनि यज्ञ घर-घर में कराते थे, जिससे प्रकृति कोप न करे मानव ग्रहों में अन्न शुद्ध रुप से आ सके। प्रथ्वी पर होने वाली वनस्पतियां शुद्ध रुप में परिपक्व हो जाती हैं। उनमें सुगन्धि प्रदान की जाती है।

दैवीयज्ञ करने का अधिकार:- दैवी हमें सुमति, सुविचार, सुभावना देती है। माता प्रकृति देवी हमें स्थूल रुप का भोजन देती है, खाद्य पदार्थ, खनिज पदार्थ देती है। शक्तिरुपी माता दुर्गा करुणा, ममता और मान देती है, अपनी लोरियों का पान कराती हैं। देवी यज्ञ करने का अधिकार उसी मानव को है जो माता के श्रंगार को नष्ट नहीं करता। भ्रष्टाचार, अण्डे तथा मांस भक्षण, शराब पीने वाले देवी यज्ञ करने के अधिकारी नही हैं। ऐसा प्राणी देवी-पूजा कदापि नहीं कर सकता। महाभारत के बाद रुढ़ियाँ आने पर अशुद्ध परम्परा से समाज का विघटन हो गया। सनातन धर्म की मानवता और वैदिक परम्परा को मानव ने दूर कर दिया, क्योंकि संसार में यथार्थ ज्ञान न रहा। ज्ञान में अधूरापन आने से रुढ़ियां बनती हैं। रुढ़ी घातक बनकर राष्ट्र, समाज व मानव जीवन को नष्ट करने वाली बन जाती है। यज्ञ तो दूसरों की रक्षा करते हैं, नष्ट नहीं करते। मन, वचन, कर्म से सत्य को धारण करके श्रद्धावती माता देवी वसुन्धरा है, प्रकृति है, वह माता है जो महापुरुष को जन्म देती है। इस प्रकार हमें देवी पूजा करनी चाहिए। जिससे हम सच्चे देवी के पुजारी बनकर आत्मकल्याण कर सकें। राष्ट्र, समाज को पवित्र बना सकें। प्रकृति देवी माँ की कृपा सभी प्राणियों के ऊपर बनी रहे। सभी सुखी रहें, कल्याण के मार्ग पर चलकर आनंद और परमानंद को प्राप्त होते रहें।

गुरुकुल लाक्षागृह
बरनावा (बागपत)
मोबा. : 9411956761

आर्यसमाज में मूल की भूल

कन्हैया लाल आर्य

महर्षि दयानंद ने सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना करके श्रेष्ठ समाज का सपना देखा था। परन्तु महर्षि दयानंद का यह सपना साकार नही हो पाया। आर्य का तात्पर्य श्रेष्ठ और समाज का अर्थ है समझ धारण करने वाला समूह अर्थात श्रेष्ठ समझ धारण करने वाला संगठन। आर्यसमाज अपने दस नियमों से परे हटकर कर्मकाण्डीय रह गया है और आर्यसमाज के कार्यकर्ता अपने को आर्य न कहकर आर्य समाजी कहते हैं, जिससे कार्यकर्ताओं में आर्यत्व भाव का अभाव रहता है। फलत: आर्य समाज में श्रेष्ठ समझ धारण करने वाले नही हैं। कार्यकर्ता चुनाव में पद के लिए झगड़ते हैं और मामले को न्यायालय तक ले जाते हैं। ऐसी स्थिति के कारण आर्यसमाज में निम्न बताई मूल की भूल है:-

1. आर्यसमाज में प्रथम मूल की भूल है ईश्वर की प्राप्ति न करना। आर्यसमाज का दूसरा नियम है-ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसकी उपासना करनी योग्य हैं।'' आर्यसमाज में कितने लोगों ने ईश्वर की प्राप्ति की है? इसका उत्तर होगा की ईश्वर की प्राप्ति किसी ने नहीं की। ईश्वर की प्राप्ति होती है, योग साधना से। परन्तु आर्यसमाज में महर्षि पतनजलि योग के नाम पर ''हठयोग'' शिविर लगाकर शिविरार्थियों को सिखाया जा रहा है। हठयोग एक प्रकार का व्यायाम है जो ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है। ईश्वर प्राप्ति का साधन पतंजलि योग दर्शन में दर्शित है। यदि हम इस योग साधना से नित्य अभ्यास करते तो ईश्वर की प्राप्ति करते और लोगों को भी योग साधना सिखाकर ईश्वर प्राप्ति कराते तो उनसे अपने आप मूर्ति पूजा छूट जाती। खेद है कि ईश्वर प्राप्ति करना आर्यसमाज में महर्षि दयानंद के बाद आज तक नहीं हो रहा है, जिससे हम ईश्वर से अछूते हैं। अब भी ईश्वर प्राप्ति, शिविर के माध्यम से सीखें व सिखाएं तो आर्य समाज यथार्थ में श्रेष्ठ समाज होगा और वाद-विवादों से हम सर्वथा दूर रहेंगे। यहां कोई प्रश्न करे कि हमें ईश्वर की प्राप्ति कहां होती है? देखो! हमारे शरीर के कण्ठ के नीचे, नॉभि के ऊपर और दोनों स्तनों के बीच जो गर्त है (गड्ढ़ा) है, उसे हृदयाकाश कहते हैं, इस हृदयाकाश में हमारी आत्मा रहती है, जो इस हृदयाकाश में सर्वव्यापक ईश्वर की प्राप्ति करता है। हमारी आत्मा हृदयाकाश में रहकर हमारे शरीर को प्राणशक्ति से संचालित करता है। याद रहे कि नित्य योगाभ्यास करने पर हृदयाकाश में हमारी आत्मा और परमात्मा की अनुभूति होती है। हमारा आत्मा और परमात्मा दोनों हवा की भांति निराकार है, दर्शनीय नहीं। इसलिए इनकी अनुभूति होती है। जैसे सुख-दुख की अनुभूति होती है। यह अनुभूति आनन्दमय होती है, तो सुख से ऊपर होती है।

देखो ईश्वर को मुसलमान सातवें आसमान में और ईसाई चौथे आसमान में तथा हिन्दू क्षीर सागर में होना बताते हैं। परन्तु तीनों का केन्द्र एक ही है। दोनों स्तनों के बीच जो गड्ढ़ा है उसे आकाश या आसमान कहते हैं। इस गडढ़े में आत्मा रहती है, इसलिए उसे हृदयाकाश कहते हैं। नाभि से हृदयाकाश तक सात अंकुल और कंठ से हृदयाकाश तक चार अंगुल होते हैं या रखते हैं। योग साधना द्वारा ईश्वर प्राप्ति की विधि महर्षि दयानंद ने उनके द्वारा रचित ग्रंथ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय प्रकरण में बताई है, जिसके अनुसार आर्यसमाज वाले शिविर लगाकर योग साधना का अभ्यास करें तथा करावें। इस तरह निरन्तर अभ्यास करते रहने पर ईश्वर की प्राप्ति होगी। इसी भांति गुरुकुलों में प्रत्येक ब्रह्मचारी को सिखावें, तभी योग साधना से श्रेष्ठता आएगी।

2. आर्य समाज में दूसरी मूल की भूल है, सामाजिक। सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुलास में स्वयंवर की रीति में प्रश्न किया है कि विवाह माता-पिता के अधीन होना चाहिए या लड़का-लड़की के अधीन रहे? उत्तर में कहा गया है कि लड़का-लड़की के अधीन उत्तम है। इसी समुलास के विवाह के लक्षण में कहा गया है कि कन्या और वर के विवाह के पूर्व एकान्त में मेल न होना चाहिए, चूंकि युवावस्था में स्त्री-पुरुष का एकान्तवास दूषण कारक है। परन्तु जब कन्या या वर से विवाह का समय हो अर्थात गुरुकुल में जब एक वर्ष वा छह महीने ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या पूरी होने मे शेष रहे तब उन कन्या और कुमारों का प्रतिबिम्ब अर्थात जिसको फोटोग्राफ कहते हैं अथवा प्रतिकृति उतारकर कन्याओं की अध्यापिकाओं के पास कुमारों की और कुमारों के अध्यापक के पास कन्याओं की प्रतिकृति भेज देवे। जिस-जिस का रुप मिल जाए उस उसके इतिहास अर्थात जन्म से लेकर उस दिन पर्यन्त जन्म चरित्र का परिचय हो, उसको अध्यापक लोग मंगवाकर देखें। जब दोनों के गुण, कर्म, स्वभाव, सदृश हों तब जिस-जिसके के साथ विवाह होना योग्य समझें उस पुरुष व कन्या का फोटो व इतिहास कन्या व वर के हाथ में देवें और कहें कि इसमें जो तुम्हारा अभिप्राय हो हमको विदित कर देना। जब उन दोनों का निश्चय परस्पर विवाह करने का हो जाए तब उन दोनों का समावर्तन एक समय में होगा। जब वे कन्या व वर आमने-सामने होकर बातचीत करना चाहें तो अध्यापकों के सामने लिखकर एक दूसरे के हाथ में देकर प्रश्नोत्तर कर लेवे। जब दोनों का विवाह तय हो जावे तब गुरुकुल मे ही विवाह कर लेवे। इसमें वर व कन्या के माता -पिता को भी आमन्त्रित करें। उपर्युक्त प्रावधान का अनुकरण आर्यसमाज में आज तक नहीं हुआ है और न हो रहा है। यदि इस प्रावधान का अनुकरण होता तो आर्यसमाज में लोग वैसे मिलते जैसे नदियाँ, समुन्द्रों में जाकर मिलती हैं। कारण कि मनुष्यों की इसमें सामाजिक समस्या का बड़ा समाधान है। इसमें कन्या व वर अच्छी शिक्षा व संस्कार पाकर सदाचारी होते हैं और साथ ही जाति प्रथा, अस्पृश्यता, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि का अन्त होता और शुद्धि में शुद्ध हुए लोग भी वापस अपने समुदाय में नहीं लौटते। अब भी यह रीति-नीति अपनाई जावे तो आर्यसमाज की सामाजिक उन्नति हो सकेगी।

3. आर्य समाज की तीसरी भूल है गावों में गोकृष्यादिरक्षणी सभा का क्रियान्वयन न करना। क्योंकि भारत गांवों का देश है। जहां गौ-पालन व कृषि होती है। गौपालन से किसान को सर्वोत्तम गोबर खाद मिलती है, जिससे अधिक मात्रा में स्वास्थ्यप्रद व स्वादिष्ट अन्न, सब्जी व फल मिलते हैं। जैसे दवाइयों में भस्म काम करती है, वैसे ही गोबर के उपले बनाकर उसे सुखावें और जलाकर उसकी भस्म खेत में डालें, तो अधिक मात्रा में अन्न आदि उत्पन्न होगा और कीड़े नहीं पड़ेंगे। अर्थात रोगरहित, पौष्टिक तथा स्वादिष्ट अन्न आदि होगा। गौ से दूध, घृत, दधि व छाछ आदि मिलता है, जो हमें प्रयोग से निरोगता एवं पौष्टिकता देते हैं एवं बुद्धि उत्पन्न होती है। गौघृत यज्ञजीवन का आधार है। गौघृत से संज्ञ करने से पर्यावरण शुद्ध होता है और किसी भी प्रकार का प्रकृति विकार नहीं होता तथा कृषि सुरक्षित रहती है। भारत कृषि प्रधान देश है और यज्ञ के अभाव में खेती सदा बनी नहीं रहती। यज्ञ के बिना समय पर वर्षा नहीं होती सदा अकाल का भय रहता है। इसलिए प्रत्येक खेत पर किसानों द्वारा नित् सुबह शाम यज्ञ होने चाहिए। कृषि के साथ गौवंश का होना आवश्यक है, क्योंकि गौवंश और कृषि एक दूसरे पर निर्भर हैं। अर्थात् दोनों का चोलीदामन का साथ है। किसानों द्वारा गौपालन नही होने से भारत के गांव दिन प्रतिदिन पतन की ओर जा रहे हैं। गौवंश आधारित खेती न होकर विदेशों की तर्ज पर यंत्रों व रासायनिक खादों पर आधारित हो गयी है, जिसके कारण अन्न व शाक सब्जी विषैली उत्पन्न हो रही है, जिसके प्रयोग से हमारा शरीर रोगिला हो रहा है और खेती की भूमि बंजर हो रही है। खेती की उपज इतनी खर्चीली हो रही है कि किसान आत्महत्या कर रहे हैं और उन्हें लाभकारी मूल्य नहीं मिल रहा है। गौपालन के अभाव में हमें असली घी-दूध नहीं मिल रहा है। फलत: हमारी शारीरिक हानि हो रही है। आर्य समाज को गोकृष्णादि की रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति इस समय लगानी चाहिए। यदि इसकी अपेक्षा की गई तो भारत से एक दिन आर्य समाज मिट जायेगा और आर्यसमाज का नाम लेवा भी नहीं रहेगा। महर्षि दयानंद ने अपने समय में ही गोकृष्णादि रक्षणी सभा की आवश्यकता समझी थी, जिसके लिए उन्होंने गौकरुणानिधि पुस्तक लिख कर इसकी पालना के निर्देश दिए थे, जिसकी आर्य समाज ने आज तक पालना नही की। यदि गौकृष्ण्यादि रक्षणी संभा के गांवों में स्थापना होती, तो आर्य समाज विश्व में उन्नति के शिखर पर होता। आर्य समाज सजग हो जाये और आर्य समाज के कार्यकर्ता गावों में जाकर किसानों से संपर्क करें और उन्हें गौपालन के लिए प्रेरित करें। गोघृत से खेत पर प्रात:-सायं दैनिक यज्ञ कराना भी सिखाएं, जिससे पर्यावरण शुद्ध होगा और खेती में किसी प्रकार का प्राकृतिक प्रकोप भी नहीं होगा, जिससे खेती उत्तम होगी। इस लेख के लेखक ने इस संबंध में **'गौ ही किसान की समृद्धि'** नामक पुस्तक लिखी है, जिसका प्रकाशन आर्य समाज, सिरोही(राजस्थान) ने किया है। यह पुस्तक 62 पृष्ठों में है और इसका मूल्य तीस रुपये है। इस पुस्तक में गौरक्षा, गौपालन और गौसम्वर्द्धन, खेती की विधि तथा यज्ञ करने की पद्धति बताई गयी है और साथ ही लाभ भी बताये गये हैं। आर्य समाजें उचित समझें तो इस पुस्तक को मंगाकर अपनी ओर से पुस्तक को छपवाकर किसानों को विक्रय करें। किसान इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे। अत: आर्य समाज ऋषि दयानंद की भावना को समझे और भारत को सुराष्ट्र बनाये। सुराष्ट्र भारत तभी होगा जब उक्त तीन बातों को अमल में लाओगे अर्थात गौकृषि यज्ञादि से शारीरिक उन्नति, ईश्वर उपासना से आत्मिक उन्नति करना और गुरुकुल से चरित्रवान शिक्षित बनाकर गुणकर्म स्वभाव के योग्य वर-वधु का आपस में विवाह कर सामाजिक उन्नति करना, यही आर्य समाज का उद्देश्य है। इसमें हमें सर्वप्रथम गावों में किसानों को उन्नत करना होगा। फिर किसानों की आर्थिक सहायता से गुरुकुल खोलकर आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करें तभी सुराष्ट्र बन सकेगा। +

आर्यसमाज मार्ग, सिरोही (राज.)
फोन : 02972-221906

हार्दिक श्रद्धांजलि

त्रयोदश पुण्य तिथि

बहुआयामी प्रतिभा के धनी, ओजस्वी वक्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, शिक्षा, साहित्य, व समाज के प्रति समर्पित

'अमरोहा रत्न' स्व० अभिनन्दन कुमार जैन को

हार्दिक श्रद्धांजलि

जाने कितने ही गये इस राह से उनका पता क्या
पर गये कुछ छोड़ इस पर अपने पैरों की निशानी
वो निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है..

उदय–15.04.1935
अस्त–19.03.2000

हम सब आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत्

समस्त जैन परिवार, अमरोहा

द्वितीय पुण्य तिथि : २९ मार्च

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रहणति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देहि॥

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नवीन वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को प्राप्त होता है।

प्रिय सौम्या को

हार्दिक श्रद्धांजलि

आर्यावर्त केसरी परिवार

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी- श्रीकान्त जोशी

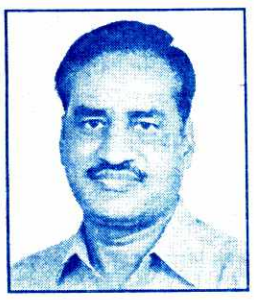

विनोद बंसल

श्रीकान्त जोशी का स्मरण करते ही एक सहज स्वभाव स्वछंद मन हंसमुख चहरा व अपनी ध्येय साधना के प्रति एक धृण निश्चयी व्यक्तित्व स्वत: मेरी आँखों के सम्मुख आ जाता है। शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो उनसे मिलने के बाद निराश लौटा हो। ध्येय साधना और कर्तव्य परायणता का इससे अनुपम उदाहरण और क्या हो सकता है कि उनके प्रचारक जीवन के अभी तीन वर्ष भी नहीं बीते थे कि उन्हें संघर्ष कार्य के लिए सन् 1963 में असम भेज दिया गया जहां बेहद विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अनेक नये आयाम दिये। उनकी जीवन यात्रा यूं तो अनेक सफलताओं से भरपूर थी किन्तू, सरकारी दमनकारी नीतियाँ का कोप-भाजन बनी पूरी तरह से तहस-नहस 'हिन्दुस्थान समाचार' को देश की एक मात्र बहु भाषी समाचार एजेन्सी के रूप में पुन: स्थापित करना उनकी बड़ी विजय थी। गत एक दशक में उन्होंने न सिर्फ इस समाचार एजेन्सी को तेरह भाषाओं में सफलतापूर्वक संचालित किया, बल्कि नेपाल, मॉरीशस, थाईलेण्ड व त्रिनीडाड सहित देश विदेश में दो दर्जन से अधिक स्थानों पर इसके ब्यूरो कार्यालय खुलवाकर इसे सैंकड़ों ग्राहकों व लाखों पाठकों के दिल की धड़कन के रूप में स्थापित कर गए। कर्मठता और राष्ट्र प्रेम का आलम यह था कि अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी वे देश व समाज का चिन्तन किया करते थे और अपने आप को सदा व्यस्त रखते थे।

21 दिसम्बर 1936 को महाराष्ट्र के रत्नगिरी जिले के देवरुख गाँव में जन्मे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीकान्त शंकर जोशी 76 वर्ष की आयु में आठ जनवरी को प्रात: काल पाँच बजे इस नश्वर शरीर से तो विदा हो लिए, किन्तु अपने व्यक्तित्व व कृतित्व की अमिट छाप हमारे हृदय पर सदा-सदा के लिए अंकित कर गए। पिता शंकर जोशी के चार बेटे और एक बेटी थी जिनमें से श्रीकान्त सबसे बड़े थे। मुम्बई के गिरगांव में ही आप संघ के स्वयंसेवक बने और 1960 में नौकरी से त्यागपत्र देकर आजीवन ब्रह्मचारी रहकर राष्ट्र सेवा का व्रत धारण किया। प्रचारक जीवन का प्रारम्भ महाराष्ट्र के नान्देड़ से हुआ। यह वही पवित्र स्थान था जहां दशम गुरू गोविन्द सिंह ने अपनी इहलीला समाप्त की थी। 1963 में संघ कार्य हेतु आपको असम भेजा गया। जहां अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आपने पच्चीस वर्षों तक कार्य किया। इस दौरान असम के चप्पे-चप्पे में संघ की एक नई पहचान बनाई तथा पूर्वोत्तर भारत की समस्त समस्याओं का गहनता के साथ अध्ययन किया और उनको सुलझाने में अहम भूमिका निभाई। 1971 से 1987 तक वे असम के प्रान्त प्रचारक रहे। उनके माध्यम से अनेक लेख, विचार गोष्ठियों व संवाद सम्मेलनों का आयोजन असम की समस्यओं के समाधान के हेतु किया गया तथा वे राज्य व केन्द्र की सम्बन्धित सरकारों तक निरन्तर जनता की बात पहुंचाते रहे। 1967 में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित गुवाहटी जनजाति सम्मेलन की सफलता की बात हो या फिर जनजातियों में शिक्षा के व्यापक प्रसार की बात हो सभी स्थानों पर जोशी का आज भी याद किया जाता है।

विद्या भारती के माध्यम से जनजातियों तक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में जोशी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। असम के इतिहास में असम आन्दोलन (1979-1985) का कालखंड अत्यन्त संवेदनशील माना जाता है। क्षेत्रीयता की भावना ध्रुवान्त तक न जाये और राष्ट्र भाव ओझल न हो पाये, इसके साथ-साथ असम के साथ हो रहे अन्याय का सफलता पूर्वक प्रतिरोध भी हो, इन सभी के बीच जोशी ने संतुलन बिठाया था।

इसके बाद 1997 से 2004 तक आप ने संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख का दायित्व संभाला। इसी दौरान सन् 2002 में सरकारी दमनकारी नीतियों का कोप-भाजन बनी पूरी तरह से तहस-नहस हिन्दुस्थान समाचार को देश की एक मात्र बहुभाषी समाचार ऐजेन्सी के रूप में पुन: स्थापित करने का बीड़ा उन्हें सौंपा गया। चहुं ओर के निराशाजनक वातावरण के बावजूद इसे पुन: स्थापित करना उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं था। गत एक दशक में उन्होंने न सिर्फ इस समाचार ऐजेन्सी को तेरह भाषाओं में सफलता पूर्वक संचालित किया बल्कि नेपाल, मारीशस, थाईलेण्ड व त्रिनीडाड सहित देश विदेश में जो दर्जन से अधिक स्थानों पर इसके व्यूरो कार्यालय खुलवा कर इसे सैंकड़ों ग्राहकों व लाखों पाठकों के दिल की धड़कन के रूप में स्थापित कर गए। पिछले कुछ दिनों से दिल्ली में बढ़ी प्रचंड सर्दी के फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य कुछ ढीला था। वे विश्राम के लिये दो दिन पहले ही दिल्ली से मुम्बई पहुंचे थे। आठ जनवरी को प्रात: काल उनके सीने में अचानक दर्द हुआ। और अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही पक्षाघात के कारण उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया। श्रीकान्त की इस संसार से विदाई ने हमसे एक धृण निश्चयी, ध्येयनिष्ठ, कुशल संगठक व एक बहुआयामी राष्ट्र प्रेमी व्यक्तित्व हमसे छीन लिया है। हार्दिक श्रद्धांजली।

329, द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-110065

दूरभाष- 9810949109

सिद्धान्तों का परिज्ञान

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

(1) वक्ता का क्या तात्पर्य है, उसे समझने वाला व्यक्ति ऊहवान् होना चाहिए। तात्पर्य मुख्य होता है, तात्पर्य समझते समय वक्ता के वाक्य, शब्द गौण हो जाते हैं।

(2) ब्रह्मविद्या बहुत सूक्ष्म और गम्भीर है। इसको समझने के लिए मन-वाणी-शरीर से भी गम्भीर होना पड़ता है।

(3) पहले व्यक्ति को सिद्धान्तों का परिज्ञान अच्छी प्रकार होना चाहिए, जैसे कि कैसे यम-नियमों का पालन होता है। यथा कोई किसी को मिलने का वचन दे, कोई वस्तु देने का वचन दे, तो उसी समय उस कार्य को करना चाहिए। नहीं करता है तो उसका विश्वास नहीं रहता। व्यक्ति स्वयं उन सिद्धान्तों का ईश्वर की सहायता से ज्ञाता अर्थात् साक्षात् करने वाला हो, या शब्द-प्रमाण पर पूर्ण श्रद्धा रखकर उसे स्मरण रखे, तभी वह सिद्धान्तों का पालन करेगा। जब भी यम-नियमों का भंग होता दिखेगा, वह इसके आधार पर रुकेगा।

(4) योगाभ्यासी को अपने सिद्धान्त निश्चित कर लेने चाहिए और इतना दृढ़ भी होना चाहिए कि इसके विपरीत किंचित् मात्र भी नहीं चलूंगा। जैसे सिद्धान्त निश्चित किया कि मुक्ति में जो-जो बाधक तत्व हैं, उनको ग्रहण नहीं करूँगा, विषयों के प्रति संयम रखूँगा और ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा, 'अनित्याशुचिदु: खानात्मसु.....' वाले सूत्र के आधार पर अपने व्यवहार का परीक्षण करता रहूँगा। इसके विपरीत एक भी विचार आए, तो तुरन्त प्रतिपक्ष भावना से उसे हटाऊँगा, अन्यथा उसका फल घोर अज्ञान, अन्धकार भोगना पड़ेगा।

वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड़, पो.- सागरपुर, जिला- साबरकांठा गुजरात, पिन- 283307

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें

●आर्यजगत के प्रमुख राष्ट्रीय स्तंभ

(गुरु विरजानंद, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानंद, रामप्रसाद विस्मिल व सरदार भगत सिंह संबन्धी पठनीय सामग्री)

- **नवजागरण के पुरोधा-महर्षि दयानंद सरस्वती।**
- **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का योगदान।**

-अशोक कुमार आर्य, मंत्री उपसभा, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

प्रवेश परीक्षा (सत्र : 2013-14)

छठी कक्षा (आयु 9 से 11वर्ष) एवं सातवी कक्षा (आयु 10 से 12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु लिखित प्रवेश परीक्षा 07 अप्रैल 2013, दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एंव स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सत्यानंद मुंजाल - कुलपति

आर्य कन्या गुरुकुल

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

शास्त्री नगर, लुधियाना-141002 दूरभाष-0161-2459563

गौ भक्तों एवं समाजिक कार्यकर्ताओं का भव्य स्वागत

वेदभूषण गुप्त

खेड़ा अफगान, सहारनपुर।

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा गौ भक्तों और सामाजिक क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को शाल उढ़ाकर प्रशस्तिपत्र व वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विष्णुमित्र वेदार्थी ने बताया कि गाय का दूध अमृत के समान है। इसका उपयोग करना चाहिए। इन्होंने बताया कि गाय के पूरे जीवन काल में लाखों व्यक्ति तृप्त होते हैं और मांस से केवल कुछ व्यक्ति। इसलिए गाय से बनी चीजों का ही प्रयोग करें। इसका प्रयोग करने से ही उसकी मांग बढ़ेगी और यही गाय की सच्ची सेवा है।

इस अवसर पर न्यास के उपाध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्ता ने कहा कि न्यास के द्वारा अपनी वैदिक संस्कृति के उत्थान के कार्यक्रम सदा चलते रहेंगे। कार्यक्रम में गौ-हत्या पर चिंता व्यक्त की गयी। सरकार से मांग की गयी कि गौ हत्यारों के खिलाफ कड़ी से कडी कार्रवाई की जाये। सम्मानित व्यक्तियों में युमना नगर निवासी पं. ओमप्रकाश वर्मा, बिजनौर निवासी आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, नकुड़ निवासी चन्द्रशेखर मित्तल, रणदेई से चौधरी हरिपाल, नकुड से संजीव, सहारनपुर शिवसेना जिलाध्यक्ष योगेन्द्र सिरोही, झैरोली से कुलदीप उर्फ पप्पू, कुतुबपुर से शिवकुमार जोशी, सरसावा से प्रवीण आर्य, नरयाली से लालसिंह, सरसावा से जयप्रकाश शर्मा, लखनौती से नीरज रोहिला, कुतुबपुर से सुभाष आदि शामिल रहे।

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास ने स्वामी आत्मबोध सरस्वती के दीक्षा जयन्ती के अवसर पर अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक विचारधारा के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए देश के तीन विद्वानों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल का भी अभिनंदन किया गया।

देवराज आर्य
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आर्य वीरेन्द्र गोयल ने आर्यजगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र आचार्य उषर्बुध जयपुर को स्वामी 'धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार,' दिल्ली के डॉ. गंगासरन आर्य को 'स्वामी आत्मबोध पुरस्कार' तथा कांगड़ा (हि.प्र.) के स्वामी वेदप्रकाश को 'ब्र. अखिलानंद आर्य भिक्षु पुरस्कार' से शॉल ओढ़ाकर तथा अभिनंदन-पत्र, स्मृति चिन्ह और ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. महावीर अग्रवाल का भी शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने सम्मानित विद्वानों को बधाई देते हुए कहा कि महापुरुषों का जीवन प्रेरणा देने वाला होता है। महात्मा आर्यभिक्षु स्वामी आत्मबोध सरस्वती का समस्त जीवन मानवता और राष्ट्र के लिए समर्पित था। वे अध्यात्म मार्ग से मानवता की सेवा करने वाले लोगों को सम्मान देते थे, इसलिए सम्मान की परम्परा उन्होंने चलाई।

प्रो. महावीर अग्रवाल, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती व अन्य- केसरी।

इस अवसर पर स्वामी दिव्यानंद सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज के सैद्धांतिक पक्ष को सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से प्रचारित करना उनके जीवन का मुख्य ध्येय है। इससे पूर्व गुरुकुल आश्रम लखनऊ के कुलपति आचार्य रामकृष्ण ने वृहद् सम्मान यज्ञ संपन्न कराया। इस अवसर पर राममूर्ति गुप्ता, जे.पी. अग्रवाल, करुणा, प्रो. जयदेव वेदालंकार, हजारीलाल, आचार्य उष बंध विमला, गुप्ता, सरोज आर्या, डॉ. अमित आर्य, डॉ. श्याम सिंह आर्य, प्रेमलता आर्या, वीरबाला गुप्ता, जगदीश विरमानी ने भी अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन देवराज आर्य और करुणा माहेश्वरी ने किया।

प्रेमबिहारी आर्य नहीं रहे

हरिद्वार। आर्य विरक्त (वानप्रस्थ+संन्यास) आश्रम, ज्वालापुर के कुटिया नं0- के निवासी व आर्यसमाज अमरोहा के पूर्व मंत्री प्रेमबिहारी आर्य (75) का 15 मार्च को ब्रेन हैम्ब्रेज के कारण आकस्मिक निधन हो गया। श्री आर्य पिछले लगभग 10 वर्षों से वानप्रस्थ आश्रम में अपनी धर्मपत्नी वीरबाला आर्या के साथ कुटिया नं0 2/90 में रह रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार 16 मार्च को पूर्ण वैदिक रीति से हरिद्वार में किया गया। श्री आर्य अत्यंत सरल सहज स्वभाव के विनोदप्रिय व्यक्ति थे। वे आजीवन आर्यसमाज तथा ऋषि के मिशन के प्रति समर्पित रहे। वे अनेक वर्षों तक आर्यसमाज अमरोहा के मंत्री पद पर आसीन रहे, तथा वानप्रस्थ आश्रम में भी आपकी उल्लेखनीय सेवाएं सदैव याद की जाती रहेंगी।

उनके निधन पर आयोजित शोक सभा में उपस्थित आश्रमवासियों, आर्य नेताओं व विद्वानों ने गहन शोक संवेदना व्यक्त करते हुए इसे एक अपूर्णनीय क्षति कहा। आर्यावर्त केसरी की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

योग ध्यान साधना शिविर ७ से

भारतभूषण आनन्द
आनन्दधाम, गढ़ी उधमपुर (जम्मू)।

महात्मा चैतन्य मुनि जी के सान्निध्य में 7 से 14 अप्रैल तक नि:शुल्क योग ध्यान साधना शिविर का भव्य आयोजन किया जा रहा है इस अवसर पर म0 वशिष्ठ मुनि, स्वामी मुक्तानन्द आदि अनुभवी वेदज्ञ आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम व योगासन आदि कराए जाएंगे, तथा दर्शन के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था के साथ ही साधकों की शंकाओं का समाधान भी किया जाएगा। शिविर में सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी होगा। शिविर सम्बन्धी विस्तृत जानकारी मो0 नं0 : 09419107788 अथवा 09419198451 पर भी प्राप्त की जा सकती है।

धूमधाम से मनाया वार्षिकोत्सव

देवपाल आर्य
सरधना (मेरठ) उ.प्र.

आर्यसमाज मंदिर में वार्षिकोत्सव समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में भजनोपदेश एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये तथा वक्ताओं ने आर्यसमाज के संस्थापक एवं समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला।

समारोह में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर युगप्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के महान कृतित्व के परिचय के साथ ही वैदिक विद्वान वानप्रस्थ मुनि एवं सहारनपुर से आयीं संगीता आर्या तथा अलका आर्या (घोड़ी बछेड़ा) ने सारगर्भित भजनोपदेश दिये। समारोह में भारी संख्या में आर्यजन शामिल रहे।

तुरन्त आवश्यकता है

तुरन्त आवश्यकता है 'आर्यावर्त केसरी' समाचार-पत्र के लिए कार्यालय अधीक्षक व उपसंपादकों की। सेवानिवृत्त एवं अंशकालिक भी सम्पर्क करें- डॉ0 अशोक कुमार आर्य, अमरोहा। फोन नं0 : 05922-262033/09412139333

शुभकामनाएं दें

नवसंवत्सर तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर प्रकाशित आर्यावर्त केसरी की स्मारिका में अपनी, अपने संस्थान अथवा प्रतिष्ठान की ओर से शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं। धन्यवाद! -सम्पादक

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली, राहुल त्यागी
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय- **आर्यावर्त केसरी** मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर उ.प्र. (भारत) -२४४२२१ से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com